अनजाने रास्ते पर चलना | ऑनलाइन पढ़ाई

स्मृति राठौर, रुचि कोटनाला और मोनू कुमार

वर्तमान समय में हम संकट के दौर से गुज़र रहे हैं। महामारी के चलते लगे लॉकडाउन और उसके प्रतिबन्धों, सामाजिक दूरी और स्कूलों के बन्द होने से लोगों का जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया है। ऐसे में हम शिक्षकों के सामने भी यह सवाल खड़ा हो गया था कि इस रहस्यमय वायरस के कारण पैदा हुई अनिश्चितता, अविश्वास और भय की स्थिति में हम दूर रह रहे अपने विद्यार्थियों से कैसे जुड़ सकते हैं? पढ़ाई-लिखाई तो जारी रखनी ही थी। सबसे पहला ख़याल दूरस्थ विधि के माध्यम से जुड़ने की तत्काल सम्भावना के रूप में आया। ठीक उसी समय, हमें दूरस्थ विधि में कक्षा की सम्भावित संरचना का अनुमान भी लगाना था। यह एक ऐसा कार्य था जिससे स्कूल के हम सभी साथी अनजान थे ।

इस लेख में हमने अपने काम की तैयारी, ऑनलाइन माध्यम पर होने वाले कार्य, दूरस्थ कार्यक्रमों के लिए हमारे द्वारा इस्तेमाल किए गए तरीक़े साझा किए हैं। इनके अलावा हमने इसमें हमारे सामने आने वाली चुनौतियाँ, इस प्रक्रिया में हमारी सीख और अन्त में आगे किए जाने वाले कार्यों के बारे में भी बात की है।

हमारी तैयारी

चूँकि ऑनलाइन माध्यम हमारे लिए नया था, इसलिए पहले हमें कई चीज़ें सीखनी पड़ीं। इनमें से एक था *व्हॉट्सएप, गूगल मीट, गूगल क्लासरूम, ज़ूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स* जैसे अलग-अलग माध्यमों के साथ-साथ *गूगल फॉर्म्स, फेसबुक और यू-ट्यूब* जैसे अन्य सहायक माध्यमों से परिचित होना और इनकी पड़ताल करना। अपने साथियों के साथ कुछ प्रारम्भिक तैयारियों को आज़माने के बाद हमने इसे विद्यार्थियों के साथ साझा किया। हमने ऑनलाइन साझा किए जा सकने वाले संसाधनों को बनाना और इकट्ठा करना शुरू किया, विषय से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़ा, विषय/कक्षा समूहों में और सामान्य समूहों में *माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, गूगल मीट* में ऑनलाइन बैठकों और फ़ोन पर कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से विचार-विमर्श करके अधिक कड़ाई से अनुवर्तन (follow up) किया। हमने अपनी पठन सामग्री पर चर्चा की और विषयगत वर्कशीट और कार्यों को विकसित करने के लिए अपने प्रयासों को उपयुक्त प्रारूपों में साझा किया।

ख़ुद को तैयार करने के बाद विद्यार्थियों के परिवारों को फ़ोन करके या उनके घरों पर जाकर हमने उनके फ़ोन और व्हॉट्सऐप नम्बर जुटाए। फिर हमने दो *व्हॉट्सएप* ग्रुप बनाए : एक कक्षा-वार और एक सामान्य।

ऑनलाइन जाना

अभिभावकों की माँगों के अनुसार पहले कुछ दिन हमने विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के अध्यायों की पीडीएफ और स्क्रीनशॉट्स भेजे। अभिभावकों को लगा था कि इस तरीक़े से उनके बच्चे अध्ययन कर लेंगे, लेकिन हम जानते थे कि यह तरीक़ा अप्रभावी होगा। स्मार्टफ़ोन की छोटी-सी स्क्रीन पर लम्बे समय तक लगातार ध्यान बनाए रख पाना विद्यार्थियों के लिए मुश्किल था। अभिभावकों ने भी महसूस किया कि केवल पाठ्यपुस्तक के अध्यायों को पीडीएफ के रूप में साझा करने से बात नहीं बन रही है।

इस समय तक हमने *गूगल फार्म* पर प्रश्न देना शुरू कर दिया था, जिसके लिए विद्यार्थियों को केवल सही विकल्पों पर बटन दबाना होता था। इसी पर हमने जाँच और सर्वेक्षण की आवश्यकता वाले छोटे प्रश्नों को भी शामिल किया। इसके लिए हमने *यू-ट्यूब* वीडियो और चित्रों का उपयोग किया। शुरुआत में हमें विद्यार्थियों से कई उत्साही प्रतिक्रियाएँ मिलीं। हमने विद्यार्थियों को एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें और कॉपी भी प्रदान कीं। ऑनलाइन कार्य के साथ-साथ पाठ्यपुस्तकों का भी उल्लेख किया। हमारे सन्दर्भ में विद्यार्थियों के पास घर पर उपलब्ध एकमात्र शैक्षणिक संसाधन पाठ्यपुस्तकें ही हैं। लेकिन केवल वे ही विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों का उपयोग स्व-शिक्षण सामग्री के रूप में कर सकते थे जो कक्षा-उपयुक्त सीखने के स्तर पर थे।

अन्य संसाधन

बतौर संसाधन ऐसी कई सारी ऑनलाइन गतिविधियाँ थीं जिनके लिए पाठ्यपुस्तक की कोई आवश्यकता नहीं थी। जैसे कि प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करना, साधारण जाँच और प्रयोग करना, दैनिक गतिविधियों को दर्ज करना, विद्यार्थी जिन अनुभवों से गुज़र रहे थे उन पर चिन्तन-मनन करना आदि। इसके साथ ही हमने कहानियों, कविताओं, गीतों और कई विषयों की मूलभूत अवधारणाओं का वर्णन करने वाले

यू-ट्यूब वीडियो के लिंक साझा किए। बहुत-सी सामग्री तो स्कूल के फेसबुक पेज पर भी साझा की गई। इसके अलावा हमने एनसीईआरटी और एकलव्य दोनों की पाठ्यपुस्तकों से स्थानीय मुद्दों से जुड़े अध्यायों के *यू-ट्यूब* वीडियो भी बनाए।

हमारे द्वारा किए गए ऑनलाइन कार्य का एक उदाहरण नीचे दिया गया एक *व्हॉट्सएप* सन्देश है। इसे कक्षा 1 के विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तक के एक अध्याय पर आधारित कार्य के लिए भेजा गया था :

प्यारे बच्चो! अपनी हिन्दी की किताब रिमझिम-1 के पेज 76 को खोलिए और उसमें आई कविता 'पतंग' को पढ़कर अपने घर के किसी सदस्य को सुनाइए फिर इसको रिकॉर्ड कर हमें भी भेजिए। इसके बाद पेज 77 पर आई गतिविधि 'पतंग का चित्र बनाइए' और 'अब कविता बनाएँ' को अपनी नोटबुक में कीजिए। फिर इसका भी फ़ोटो खींचकर हमें भेजिए।

एक और उदाहरण है : सन्थाली लोककथा *फ़र्स्ट हाउस* पर आधारित एक वीडियो, जिसे बुक-बॉक्स ने *यू-ट्यूब* पर डाला है। इस वीडियो में दो दोस्त विभिन्न जानवरों के सुझाव लेकर अपना पहला घर बना रहे हैं। प्रत्येक जानवर ने अपने शरीर के अंगों के अनुरूप घर के एक हिस्से को बनाने का सुझाव दिया। दोस्तों ने उन भागों के साथ पूरे घर के निर्माण के लिए सामग्री इकट्ठा की। यह वीडियो देखने के बाद निम्न सवालों को सामने रखा गया : वीडियो देखने के बाद क्या आपको लगता है कि यह कहानी सामूहिक कार्य का एक उदाहरण है? किस तरह से? वीडियो में कितने जानवर थे? घर किस चीज़ से बना था? (लकड़ी/ईंट) घर का कौन-सा हिस्सा बाँस से बनाया गया था?

माध्यमों की विशेषताएँ

समय के साथ हमें यह समझ में आया कि असमकालीन दूरस्थ विधियों में, एक-दूसरे को देखे बिना, शैक्षणिक कार्य करना अप्रभावी है। इसलिए हमने समकालीन दूरस्थ विधि *गूगल मीट* के ज़रिए उन विद्यार्थियों के साथ कार्य शुरू किया, जिनके पास इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन की पहुँच थी और जो इसमें शामिल होने के लिए तैयार थे। जिनके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं थी उनसे जुड़ने के लिए हमने टेलीफ़ोन का उपयोग किया।

सभी ऑनलाइन माध्यमों के कुछ फ़ायदे हैं। उदाहरण के लिए टेलीफ़ोन सभी विद्यार्थियों के लिए सबसे सुलभ साधन है और इसमें नेटवर्क की समस्याएँ न के बराबर हैं। वहीं, *व्हॉट्सएप* वीडियो, ऑडियो, *गूगल फ़ॉर्म*, वेबसाइट के लिंक, चित्र और यहाँ तक कि दस्तावेज़ों को भी साझा करने के लिए एक सस्ता साधन है। यह वास्तविक समय में सदस्यों के एक बड़े समूह के साथ विचारों/अपडेट को साझा करने में भी मदद करता है। *फेसबुक* डिजिटल संसाधनों के भण्डारघर के रूप में जगह प्रदान करने के साथ ही साझाकरण और चर्चा के लिए एक माध्यम के रूप में भी काम आता है। *यू-ट्यूब* वीडियो का भण्डारघर है और *फेसबुक* के विपरीत, गूगल खाता न होने पर भी इन संसाधनों तक पहुँच की अनुमति देता है। *फेसबुक* और *यू-ट्यूब* दोनों पर ही लाइव सत्र किए जा सकते हैं। *गूगल मीट* का लाभ यह है कि यह व्यक्तिगत और समूह दोनों में कार्य करने की जगह देता है। हालाँकि इसके लिए काफ़ी इंटरनेट बैंडविड्थ की आवश्यकता होती है और इसलिए यह कुछ विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

विभिन्न प्रकार के कार्यों को सौंपने के इष्टतम तरीक़े को ढूँढ़ने के लिए हमने घरों के दौरों के साथ-साथ इन सभी माध्यमों को इस्तेमाल करने की कोशिश की ।

हमने क्या सीखा

हम जानते थे कि पाठ्यपुस्तक के अध्यायों की पीडीएफ प्रतियाँ या स्क्रीनशॉट भेजना अप्रभावी होगा। लेकिन अभिभावकों की माँग के कारण हमें यह करना पड़ा (हालाँकि अभिभावकों को भी जल्द ही इन फाइलों को साझा करने की सीमाओं का एहसास हुआ)।

जब लॉकडाउन प्रतिबन्धों में ढील दी गई तो ऑनलाइन माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ आना काफ़ी कम हो गया। मोबाइल तक उनकी पहुँच कम हो गई और विभिन्न कारणों से विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक कार्यों में काफ़ी कमी आई। कम और धीमी प्रतिक्रिया का एक बड़ा कारण कमज़ोर और बाधित इंटरनेट कनेक्टिविटी थी। कई मामलों में यह देखा गया कि विद्यार्थी अपना कार्य कर तो रहे थे, लेकिन उसे *व्हॉट्सऐप* पर साझा नहीं कर पा रहे थे।

लॉकडाउन हटने के बाद हमने हफ़्ते या पन्द्रह दिनों में एक बार विद्यार्थियों के घर जाकर उन्हें वर्कशीट्स और हैंडआउट्स की हार्ड कॉपी दीं। इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन की सीमित पहुँच के कारण पैदा होने वाली चुनौतियों को कम करने के लिए हमने विद्यार्थियों के घरों में जाकर शैक्षिक सहायता भी दी।

एक दिलचस्प पहलू यह है कि हर पन्द्रह दिनों में घर के दौरों के माध्यम से हम केवल 80-85 प्रतिशत विद्यार्थियों से जुड़ पाए और हर तीस दिनों में दौरा करने पर केवल 5-10 प्रतिशत विद्यार्थियों से। पाँच प्रतिशत विद्यार्थी काफ़ी दूर रह रहे थे और पहुँच के बाहर थे। इसलिए उनके लिए हमें केवल *व्हॉट्सऐप* और *गूगल मीट* माध्यम पर ही निर्भर रहना पड़ा। बचे हुए पाँच प्रतिशत विद्यार्थियों के साथ हम रुक-रुककर ही काम कर पाए।

बतौर शिक्षक बच्चों को ऑनलाइन कार्यों के साथ जोड़ने के हमारे प्रयासों से हमने बहुत कुछ सीखा है। उदाहरण के लिए, विषयगत कार्यों के लिए हमें विषयों के बीच की सीमाओं को

तोड़ने की ज़रूरत पड़ी। विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करने के लिए हमें विषय-सामग्री और अवधारणाओं का ज़्यादा गहन अध्ययन करना पड़ा। रुचि के अनुसार, "मुझे 'कला' में ख़ासी दिलचस्पी है और इसे पढ़ाने में मैं सहज महसूस करती हूँ। हालाँकि जब मैंने कक्षा एक और दो के विद्यार्थियों को हिन्दी, अँग्रेज़ी और गणित पढ़ाना शुरू किया, तो इन विषयों में मेरी दिलचस्पी जागी। मैंने वर्कशीट बनाना, *गूगल फार्म* का उपयोग करना, *यू-ट्यूब* सामग्री बनाना और कहानियों को आवाज़ देना भी सीखा।"

ऑनलाइन जाने की चुनौतियाँ

मोबाइल फ़ोन की छोटी स्क्रीन, कमज़ोर इंटरनेट कनेक्शन, घर में पढ़ाई के लिए मुनासिब माहौल न होना, विद्यार्थियों का ऑनलाइन कक्षाओं को गम्भीरता से न लेना और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए डिजिटल तकनीक से अपरिचित होने जैसी चीज़ें हमारी प्रमुख चुनौतियाँ रहीं। इसके साथ ही कुछ परिवार ऐसे भी हैं जो इंटरनेट डेटा को रीचार्ज करने का ख़र्चा वहन नहीं कर सकते। एक और तरह की परेशानी तब आती थी जब दो या दो से अधिक बच्चे एक साथ एक ही मोबाइल का इस्तेमाल करना चाहते थे।

आगे का रास्ता

कोविड-19 ने एकदम नई और जटिल स्थिति पैदा कर दी है। बतौर शिक्षक हमें अध्ययन के फ़ासलों को ख़त्म करना है, लेकिन एक नियमित कक्षा के मुक़ाबले ऑनलाइन कक्षा में हम विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत रूप से नहीं जुड़ सकते थे या सीखने-सिखाने के सभी संसाधनों का उपयोग नहीं कर सकते थे। हालाँकि हमने वर्कशीट्स और पाठ्यपुस्तक-आधारित कार्य दिए, पुस्तकें उधार दीं, घर जाकर ट्यूशन पढ़ाया, लेकिन फिर भी दूरस्थ और ऑनलाइन विधियों की अपनी सीमाएँ थीं। इस क्षेत्र में बेहतर कार्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम स्थिति को समझने के बाद कैसे कार्य करेंगे।

लॉकडाउन के दौरान और इसके बाद की सभी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए हम विद्यार्थियों के घरों के दौरे करने पर ज़्यादा ज़ोर दे रहे हैं। हम सीखने, ऑनलाइन सामग्रियों को तैयार करने और ऑनलाइन कार्य को बरक़रार रखने के लिए जुड़ाव की गतिशील विधियों को लगातार टटोल रहे हैं ताकि हम भविष्य में लॉकडाउन या अन्य आपात स्थितियों का सामना कर सकें।

आभार

इस पूरे सफ़र में अपनी टीम द्वारा कोरोनाकाल में किए गए कार्यों की हम तहे दिल से सराहना करते हैं। यह लेख सभी की मेहनत का नतीजा है।

स्मृति राठौड़ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में प्राथमिक कक्षाओं में अँग्रेज़ी पढ़ाती हैं। उनसे **smriti.rathore@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।

रुचि कोटनाला अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में प्राथमिक और उच्च-प्राथमिक कक्षाओं में कला और शिल्प सिखाती हैं। उनसे **ruchi.kotnala@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मोनू कुमार अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में पहली और दूसरी कक्षा में हिन्दी और उच्च-प्राथमिक कक्षाओं में संस्कृत पढ़ाते हैं। उनसे **monu.kumar@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी